

रैदास

(जन्म : सन् 1388 ई., निधन : सन् 1518 ई. अनुमानित)

संत कवि रैदास कबीर के समकालीन महान संत थे। रैदास को रविदास के नाम से भी जाना जाता है। यह माना जाता है कि संत रामानंदजी के शिष्यों में से एक थे। ये काशी में रहते थे। पढ़े-लिखे नहीं थे, मगर उनकी साधना उच्च प्रकार की थी।

उनके पदों में अनन्य भक्तिभाव की अभिव्यक्ति है। संत कवि रैदास ने भक्त और भगवान के अटूट संबंध की पुष्टि अपने पदों में की है। आत्मा-परमात्मा का मिलन सोने में सुगंध की भाँति उत्तम बतलाया है। उनके पद बहुत लोकप्रिय हैं। उनके कुछ पद गुरुग्रंथ साहब में संग्रहीत हैं। बोलचाल की सरल सहज भाषा में दो सौ से अधिक पद हैं।

यहाँ संकलित पद में रैदास कहते हैं कि प्रभुजी मैं हरहाल में आपके निकट रहता हूँ। मुझे आपकी भक्ति से प्रभुमय बनना है। मैं आपका दास आपकी प्रतीति चाहता हूँ। यहाँ आत्मा और परमात्मा की अद्वैतता वर्णित है।

प्रभुजी तुम चंदन हम पानी ।
जाकी अंग अंग बास समानी ।
प्रभुजी तुम घन बन हम मोरा ।
जैसे चितवत् चंद चकोरा ।
प्रभुजी तुम दीपक हम बाती ।
जाकी जोति बरै दिन-राती ।
प्रभुजी तुम मोती हम धागा ।
जैसे सोनहिं मिलत सुहागा ।
प्रभुजी तुम स्वामी हम दासा ।
ऐसी भक्ति करै रैदासा ।

शब्दार्थ

बास बू, गंध मोरा मोर घन बादल बरै जले दासा दास सुहागा एक तरह का खनिज पदार्थ चकोर एक पक्षी जो चंद्र की ओर देखता है चितवत् देखना

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

- (1) प्रभु चंदन है तो भक्त क्या है ?
- (2) भक्त दीपक बनकर क्या चाहता है ?
- (3) सोने का महत्त्व कब बढ़ता है ?

2. निम्नलिखित प्रश्न के दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

- (1) भक्त किन-किन उदाहरणों द्वारा समझाता है कि मैं प्रभु के निकट हूँ - अपने शब्दों में लिखिए।

3. उचित जोड़े बनाइए :

‘अ’	‘ब’
चंदन	मोरा
घन बन	ज्योति
दीपक	पानी
सोना	रैदासा
भक्त	सुहागा

योग्यता-विस्तार

- रैदास के अन्य पद संकलित कीजिए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- रैदास के पद एवं गुरुनानक के पद की तुलना कीजिए।
- निरालाजी की ‘तुम और मैं’ कविता का गान करें और समझाइए।